RAN-2401000105020521

RAN-2401000105020521

T.Y.B.A. (Non-NEP) (Sem. V) Examination November - 2025

Paper : 11 - Madhya Ugin Kavita (Surdas - Bhrmargeet Saar)

मध्ययुगीन कविता 'भ्रमरगीतसार' – सुरदास

સૂચના : / Instructions
(1) ઉપરોક્ત દર્શાવેલ વિગતો ઉત્તરવહી પર અવશ્ય લખવી.
Fill up strictly the above details on your answer book

Seat No.:

Student's Signature

प्र–1. **बहु विकल्पी प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।** **10**

1) सूरदास का जन्म कब हुआ था?
(अ) सन् 1478 (ब) सन् 1482
(क) सन् 1530 (ड) सन् 1550

2) संयोगिनी के रूप में भी नारी को 'भ्रमरगीत' में रखा गया है, वह है – ?
(अ) यशोदा (ब) कुब्जा
(क) राधा (ड) वृध्दगोपी

3) उध्दव–गोपी संवाद से युक्त काव्य को किस काव्य परम्परा के नाम से जाना जाता है?
(अ) भ्रमरगीत सार (ब) भ्रमरगीत काव्य परम्परा
(क) उध्दवशतक परम्परा (ड) कोई नहीं

4) 'भ्रमरगीत' में कौन–सा छंद है?
(अ) षट्पदी छंद (ब) मांत्रिक छंद
(क) वर्णिक छंद (ड) लयात्मक छंद

5) भ्रमरगीत में नारी पात्र कितने है?
(अ) दो (ब) तीन
(क) चार (ड) पाँच

प्र–2. ''भ्रमरगीत' में गोपियों की विरह वेदना की मार्मिक अभिव्यक्ति हुइ है।'', **13**
तर्क संगत उत्तर दीजिए।

अथवा

''भ्रमरगीत' निर्गुण पर सगुण की विजय का काव्य है।'' इस कथन की सार्थकता सिध्द कीजिए।

प्र–3. 'भ्रमरगीत' के आधार पर उध्दव का चरित्रांकन कीजिए। **13**

अथवा

'भ्रमरगीत' के आधार पर गोपियों की मनोदशा की चर्चा कीजिए।

प्र–4. अ. टिप्पणी लिखिए। **07**

'भ्रमरगीत' में संवाद योजना।

अथवा

सगुण–भक्ति धारा की लाक्षणिकताएँ।

ब. ससंदर्भ व्याख्या कीजिए। **07**

ऊधो! इतनी कहियो जाय।
अति कृसगात भई हैं तुम बिनु बहुत दुखारी गाय।।
जल समूह बरसत अंखियन तें हूँकत लीने नांव।
जहाँ जहाँ गोदोहन करते ढूँढत सोइ सोइ ठांव।।
परित पछार खाय तेहि तेहि थल अति व्याकुल है दिन।
माँनहुँ सूर काठि अरे हैं बारि मध्य तें मीन।।

अथवा

संदेसनि मधुबने–कूप भरे।
जो कौ पथिक गए हैं ह्यां ते फिरि नहिं अवन करे।।
कै वै स्याम सिखाय समोधे कै वै बीच मरे?
अपने नहिं पढ़वत नंदनंदन हमरेउ फेरि धरे।।
मसि खूँटी कागद जल भीजे सर दव लागि जरे।
पाती लिखै कहो क्यों करि जो पलक–कपाट अरे?।।